

हम भाग्यशाली आत्माओं को याद की यात्रा सिखलाकर, पतित से पावन बनाकर, कर्मातीत बनने का रास्ता बतलाने वाले, मुक्ति-जीवनमुक्ति दांता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - अपनी जांच करो कि कितना समय बाप की स्मृति रहती है, क्योंकि स्मृति में है ही फायदा, विस्मृति में है घाटा.

अभी तो हम सब जानते हैं कि यह संगमयुग का बहुत थोड़ा सा समय हमारे पास रह गया है. अभी रहे हुए इस अमूल्य समय में हमें लास्ट ६३ जन्मों के पापों को नष्ट करना है. दूसरा हमें आने वाले सारे कल्प के लिए अपना ऊंच भाग्य बनाना है. तीसरा हमारी आत्मा को दिव्य-गुणों और शक्तियों से भरना है. चौथा हमारी श्रेष्ठ स्थिति बनाकर सारे विश्व की मनसा और कर्मणा सेवा करनी है. पाँचवाँ हमें कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करना है. यह सब हम तब कर पायेंगे जब की हम हर श्वास एक बाप की याद में रहेंगे. इसलिए बाबा ने कहा की अपनी जांच करो कितना समय बाप की स्मृति रहती है, क्योंकि स्मृति में है ही फायदा, विस्मृति में है घाटा.

बाबा की स्मृति सदा रहे इस के लिए हमें अपनी आत्म-अभिमानि अवस्था बनाने का पुरुषार्थ करना है क्योंकि हमें निराकारी बाप की याद तब रहेगी जब हम स्वयं को आत्मा समझेंगे और दूसरों को भी आत्मा समझकर कार्य व्यवहार में आयेंगे.

देही-अभिमानि अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी है. एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो का उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रूप में फील करें यानी बिजरूप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये. जितनी हमारी देही-अभिमानि अवस्था बढ़ती जायेगी उतना हमारे आस-पास शान्ति का वायुमण्डल भी बनता जायेगा.

इस स्वमानो को उपयोग करने से हमारे व्यर्थ संकल्पों भी समाप्त हो जायेंगे.

में आत्मा हूँ. भृकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ . शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. मैं चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब हम अपनी देही-अवस्था में रहकर, बाबा की आज कि मुरली से निकाले गये कुछ महा-वाक्यों को मन में ही पढ़ेंगे (मुख से बोले बिना). इसे हमें आत्म-अभिमानि अवस्था में रहकर बाबा को याद करने की प्रैक्टिस होगी.

- यहाँ बैठ तुम बच्चे, बाप को याद तो जरूर करते हो पावन बनने के लिए. बाबा ने कहा है मामेकम याद करो तो पाप कटे. जितना टाइम बाप को याद करेंगे उससे ही पावन बनेंगे.

- बाबा का फ़रमान है - धन्धा आदि सब कुछ करो परन्तु समय निकाल मेरे को याद करो.

- बाबा कहते हैं याद का पोता-मेल रखो और हर रोज चेक करके अपना फायदा बढ़ाते चलो. स्मृति से है फायदा विस्मृति से है घाटा.

- यह तो हम जानते हैं की बाबा हैं पतित-पावन. हम असूल आत्माये हैं अपने घर से यहाँ आये हैं यह शरीर लेकर पार्ट बजाने. शरीर विनाशी है आत्मा अविनाशी हैं.

- बाबा पुछते हैं - हे आत्मा याद करो. छोटे-पन से कोई उलटा काम तो नहीं किया. जो भी उलटे काम हुए हैं बाप को बतलाकर हलके हो जाओ.

- कल हम बरोबर ऐसे देवी-देवता थे फिर आज हम यह बनते हैं. बिल्कुल ही नजदीक है.

ॐ शांति.